International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.407-411

उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं के सम्प्रेषण कौशल का कक्षा–कक्ष प्रबन्धन पर प्रभाव का अध्ययन

सीमा चौहान*
प्रो. (डॉ.) रीटा शर्मा**

प्रस्तावना

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह निरन्तर अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। उसकी विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ इस कार्य में उसे सहायता प्रदान करती है। अनुभव एवं अनुभूतियों को एकत्रित करना और दूसरों के साथ बाँटना यही प्रक्रिया सम्प्रेषण कहलाती है।

जीवन का उद्‌भव एवं अस्तित्व सम्प्रेषण व्यवहार पर आधारित है। मानव सभ्यता व संस्कृति के विकास के प्रथम चरण में ही सम्प्रेषण प्रक्रिया का अस्तित्व था। जीवन एवं सम्प्रेषण एक दूसरे के अस्तित्व के सहगामी है। जीवों में सहभागिता के सन्दर्भ में हृदयंगम भावनाओं के अभिव्यक्तिकरण की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न प्रतीकों, ध्वनियों, बोलियों, भाषाओं आदि का क्रमोत्तर रूप से आविष्कार व विकास हुआ।

इस प्रकार सम्प्रेषण में दो या दो से अधिक जीव या व्यक्ति सूचनाओं एवं अनुभूतियों का आपस में विनिमय करते हैं। सम्प्रेषण के अभाव में मानवीय जीवन कल्पना से परे है क्योंकि जीवन का उद्‌भव एवं अस्तित्व सम्प्रेषण व्यवहार पर आधारित है तथा जीवन का अस्तित्व भी सम्प्रेषण व्यवहार के अन्त के साथ स्वयमेव समाप्त हो जाता है। दूसरे शब्दों में जीवन एवं सम्प्रेषण एक दूसरे के अस्तित्व के सहभागी हैं।

सम्प्रेषण एक ऐसा कार्य है, जिसमें व्यक्ति अपने ज्ञान, अनुभवों, विचारों, सूचनाओं आदि के आदान–प्रदान में इस प्रकार का व्यवहार करता है कि उससे प्रत्येक व्यक्ति को उसी प्रकार की सूझबूझ, अर्थ, आशय एवं सन्देशों की प्राप्ति होती है अर्थात् दोनों ही व्यक्ति सन्देश अथवा उसके आशय की उपलब्धि की दृष्टि से उभयनिष्ठता की या समान अवस्था में होते हैं। सम्प्रेषण की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि जो व्यक्ति सम्प्रेषण ग्रहण कर रहा है अर्थात् सम्प्रेषक तथा जो व्यक्ति सम्प्रेषण ग्रहण कर रहा है अर्थात् सम्प्रेषी दोनों के अनुभवों में कुछ समानता अवश्य हो, क्योंकि ये समानताएं ही सम्प्रेषण के लिए आधार का कार्य करती है। दोनों के भावों एवं विचारों में जितनी अधिक समानता होगी, उतना ही अधिक सम्प्रेषण प्रभावी होगा। इस प्रकार भाषा, संकेत या चिन्ह आदि के माध्यम से अपने चिन्तन एवं विचार को दूसरों तक पहुँचाने की प्रक्रिया को सम्प्रेषण कहा जा सकता है।

समाज के दर्पण के रूप में पुरा साहित्य एवं ग्रन्थ भी संचार माध्यम ही है जो सूचनाओं का व्यापक सम्प्रेषण करते हैं। प्राचीन समय में यह सम्प्रेषण मुख्यतया भाषा के अभाव में हाव–भाव एवं संकेतों तक ही सीमित था। परन्तु धीरे–धीरे भाषा के विकास से यह सम्प्रेषण मौखिक रूप से उद्‌धृत हुआ। लिपि के विकास से यह सम्प्रेषण यात्रा लिखित रूप में भी अभिव्यक्त होने लगी।

संचार के इन माध्यमों के अनुरूप ही सम्प्रेषण में नये शब्दों, वाक्यों, अभिव्यक्तियों और वाक्य संयोजन की विधाओं का समावेश हुआ है।

तकनीकी के विकास के कारण ही सम्प्रेषण साधनों का विकास हुआ है। लिखित सामग्री की तुलना में संचार माध्यम अधिक व्यापक है क्योंकि तुरन्त एवं दूरगामी असर करते हैं।

---

* शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** प्राचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।

वर्तमान समय में टी. वी. प्रकाशन जगत, इन्टरनेट, वेबसाइट्स के रूप में संचार माध्यमों द्वारा सम्प्रेषण और भी सहज एवं सुलभ हो गया है। सम्प्रेषण मात्र सूचना का सामान्य अन्तरण ही नहीं है बल्कि उसके सफल होने के लिए उसमें प्रतिपुष्टि यानि व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के साथ सम्प्रेषणात्मक अन्योन्यक्रिया (Communication Interaction) भी होना आवश्यक है। जवाबी सूचना से निर्देशित होकर व्यक्ति अपने व्यवहार में सुधार करता रहता है, ताकि उसे सही–सही समझा जाये और वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें।

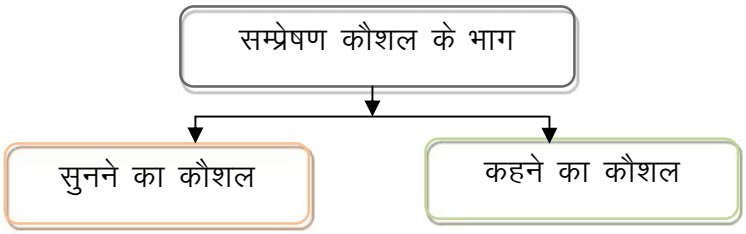

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्प्रेषण कौशल के द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जाता है। प्रभावी सम्प्रेषण कौशल कक्षा–कक्ष अंतःक्रिया का आधार है। बिना सम्प्रेषण के शिक्षण सम्भव नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि एक अध्यापक को अच्छा सम्प्रेषक (सूचना देने वाला) होना चाहिए। सम्प्रेषण की कुशलता इस बात से प्रदर्शित होती है कि वह कितनी दक्षता तथा कुशलता से सम्प्रेषी के व्यवहार में परिवर्तन लाती है। सम्प्रेषण की सफलता के लिए जरूरी है कि सम्प्रेषी संदेश को ध्यानपूर्वक सुनकर ग्रहण कर पाये अन्यथा सम्प्रेषण अपूर्ण ही रहेगा। सम्प्रेषण कौशल को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

सुनने का कौशल (Skill of Listening)–

शिक्षण में बहुत सी समस्याओं का समाधान अध्यापक द्वारा ध्यानपूर्वक सुनने के कौशल से किया जाता है। सुनने के कौशल का विकास करने के लिए अध्यापक चार चरणों का अनुसरण कर विद्यार्थियों को स्वयं समस्या का समाधान करने के लिए प्रेरित करता है। इसे संक्षेप में SLLR कहते हैं– 1. रूको (Stop), 2. देखों (Look), 3. सुनो (Listen), 4. अनुक्रिया करो (Respond)।

शिक्षक अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु उपयुक्त कक्षा–कक्ष में इन सम्प्रेषण विधाओं का प्रयोग कर शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाते हैं।

कक्षा–कक्ष प्रबन्धन शिक्षार्थियों के लिए एक सुरक्षित और उत्पादक सीखने के माहौल को बनाये रखने में एक शिक्षक की शैली को संदर्भित करता है, अध्यापक का शिक्षण तभी प्रभावी एवं सफल माना जायेगा जब वह अपने सम्प्रेषण कौशल में दक्ष होने के साथ–साथ उचित कक्षा–कक्ष प्रबन्धन करे अर्थात् शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कक्षा कक्ष का भौतिक प्राकृतिक एवं सामाजिक वातावरण जितना अधिक सहज एवं अनुकूल होगा, उसकी सफलता उतनी ही दीर्घकालिक होगी।

अध्यापक द्वारा कक्षा–कक्ष प्रबन्धन के अन्तर्गत कक्षा–कक्ष की रणनीति व रूपरेखा बनाई जाती है। जिसके द्वारा वह अपने अध्यापन कार्य को सुनियोजित एवं व्यवस्थित कर कक्षा का वातावरण शिक्षण योग्य बनाता है। जहाँ शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण के समय स्वयं को सुरक्षित एवं आरामदायक महसूस करता है। कक्षा कक्ष प्रबन्धन प्रक्रिया में जहाँ कक्षा का भौतिक व प्राकृतिक वातावरण सभी सुविधाओं युक्त होना आवश्यक है, वही इसमें छात्र अनुशासन, पक्षपात रहित वातावरण, शिक्षा का उत्तम स्तर, उचित नेतृत्व, छात्रों की उचित संख्या व व्यवस्थित स्थिति भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

शोध कथन

''उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के सम्प्रेषण कौशल का कक्षा–कक्ष प्रबन्धन पर प्रभाव का अध्ययन''

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सम्प्रेषण कौशल का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सम्प्रेषण कौशल में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध के चर

प्रस्तुत शोध में दो चरों को लिया गया है। जो निम्नलिखित है–

- **स्वतंत्र चर–** उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का सम्प्रेषण कौशल
- **आश्रित चर–** उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का कक्षा–कक्ष प्रबन्धन

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

- **उच्च प्राथमिक विद्यालय–** वह विद्यालय जहाँ कक्षा छः से आठ तक औपारिक रूप से शिक्षण कराया जाता है, उच्च प्राथमिक विद्यालय कहलाता है।
- **सम्प्रेषण कौशल–** अध्यापक द्वारा सूचनाओं के आदान प्रदान करने की प्रक्रिया को कुशलता से करने की योग्यता।
- **कक्षा–कक्ष प्रबन्धन–** कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का अभिप्रायः ऐसे अध्यापकीय कौशल अथवा तकनीक से है जिसकी सहायता से एक अध्यापक अपनी कक्षा की गतिविधियों को पूरी तरह अपने नियन्त्रण में रखकर उपयुक्त एवं प्रभावपूर्ण कक्षा–प्रबन्ध का परिचय देता है और इस तरह शिक्षण उद्देश्यों की उचित प्राप्ति के लिए पूर्ण व्यवस्थित अनुशासनबद्ध, सौहार्दपूर्ण और सुविधाजनक कक्षा परिस्थितियों के निर्माण में सफल सिद्ध होता है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएँ

समय व साधनों के सीमित होने के कारण शोध कार्य की भी निम्नलिखित सीमाएं निश्चित की हैं–

- शोध हेतु जयपुर जिले का चयन किया गया है।
- शोध हेतु उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के 200 अध्यापक एवं 200 अध्यापिकाओं को लिया गया है।
- शोध हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं को लिया गया है।
- शोध हेतु शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को लिया गया है।
- शोध कार्य अध्यापकों के सम्प्रेषण कौशल का कक्षा–कक्ष प्रबन्धन पर प्रभाव तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में **सर्वेक्षण विधि** का चयन किया गया है। इस विधि का चयन अनुसंधान के उद्देश्यों, परिकल्पनाओं तथा आकड़ों के आधर पर प्रकृति के अनुरूप किया गया है।

शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिए जनसंख्या उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाएं हैं, जिसकी संख्या हजारों में है। इस सम्पूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन सम्भव नहीं है। अतः समय, धन एवं साधनों की सीमितताओं के कारण शोधकर्त्री ने अध्ययन की अभीष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जयपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय एवं निजी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को चुना है।

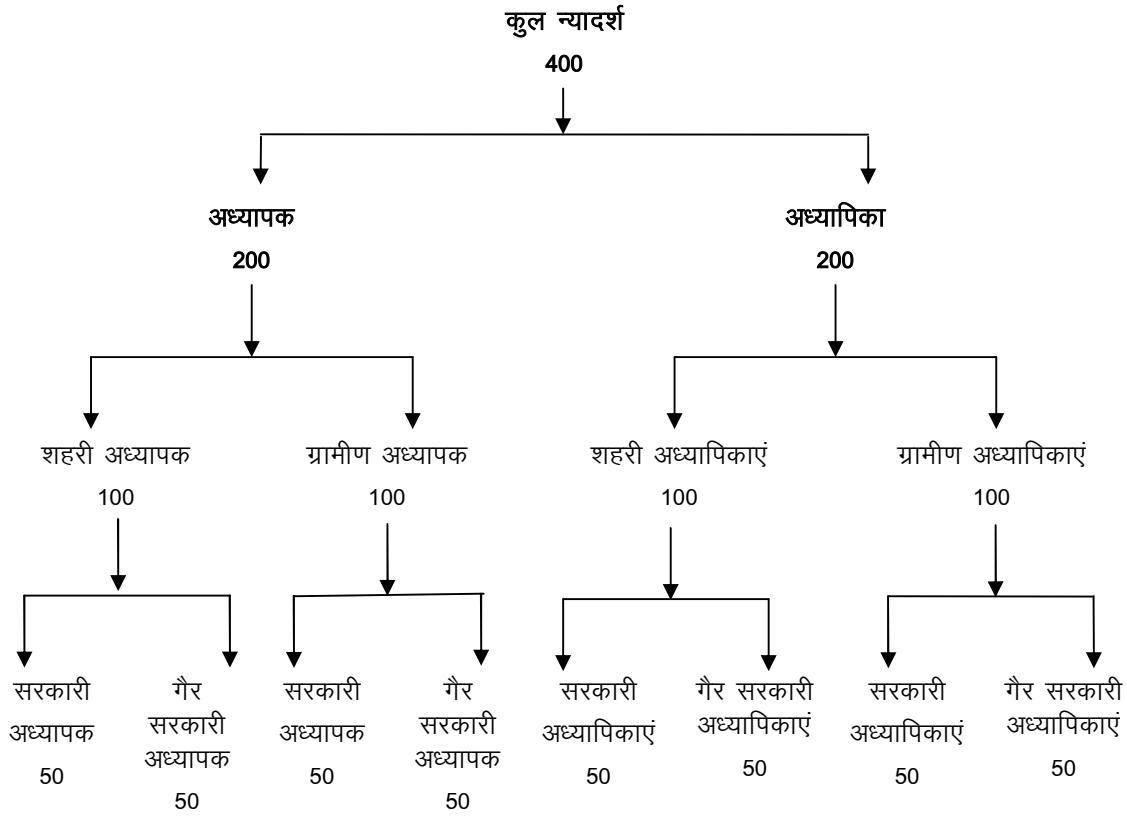

शोध के उपकरण

- सम्प्रेषण कौशल मापनी–स्वनिर्मित उपकरण।
- कक्षा–कक्ष प्रबन्धन मापनी– स्वनिर्मित उपकरण।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिणाम जानने के लिए निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है–

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी–परीक्षण
- सह–सम्बन्ध गुणांक

सारणीयन एवं विश्लेषण

परिकल्पना–1 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सम्प्रेषण कौशल में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थक अन्तर	निष्कर्ष
उ. प्रा. विद्यालय के अध्यापकों का सम्प्रेषण कौशल	200	85.72	9.37	0.57	0.05=1.97	स्वीकृत
उ. प्रा. विद्यालय की अध्यापिकाओं का सम्प्रेषण कौशल	200	85.20	9.02		0.01=2.59	स्वीकृत

(df = N_1+N_2-2) = 200+200-2 = 398

सारणी 1 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का सम्प्रेषण कौशल का टी–मान स्वतंत्रता के अंश 398 पर 0.57 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर दिये गये तालिका मान से कम है। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–2 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थक अन्तर	निष्कर्ष
उ. प्रा. विद्यालय के अध्यापकों का कक्षा–कक्ष प्रबन्ध	200	89.03	7.46	0.41	0.05=1.97	स्वीकृत
उ. प्रा. विद्यालय की अध्यापिकाओं का कक्षा–कक्ष प्रबन्ध	200	88.72	7.46		0.01=2.59	स्वीकृत

$(df = N_1+N_2-2) = 200+200-2 = 398$

सारणी 2 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन का टी–मान स्वतंत्रता के अंश 398 पर 0.41 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर दिये गये तालिका मान से कम है। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सम्प्रेषण कौशल में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जिसका कारण उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों का एक ही प्रकार के सम्प्रेषण कौशल का प्रयोग करना है।
- उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कक्षा–कक्ष प्रबन्धन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जिसका कारण उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा कक्षा–कक्ष प्रबन्धन विधि में कोई अन्तर नहीं होना है।

शैक्षिक निहितार्थ

- प्रस्तुत अध्ययन का लाभ अध्यापकों को अपने सम्प्रेषण कौशल को बढ़ाने में मिल सकेगा।
- प्रस्तुत अध्ययन का लाभ अध्यापकों को अपने कक्षा–कक्ष प्रबन्धन को और अधिक प्रभावी एवं आर्कषक बनाने में मिल सकेगा।
- प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष से प्रभावी सम्प्रेषण कौशल के माध्यम से अध्यापक विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास कर सकेंगे

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

¤ मित्तल, सन्तोष : शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा–कक्ष प्रबन्ध, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

¤ शर्मा, आर. ए. (1998) : शिक्षा तकनीकी, लायल बुक डिपो, मेरठ।

¤ कुमार महेन्द्र : शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्प्रेषण कौशल, ॰ण्चतंजपलवहपजं जवकंलण् बवउ

¤ त्रिपाठी, लाल, बच्चन (2010) : मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ, एच. पी. भार्गव, बुक हाउस, आगरा।

¤ चन्दोला, लता (2004) : सम्प्रेषण, विद्या, कौशल और माध्यम, अर्पिता प्रिन्टोग्राफर्स, लक्ष्मी नगर, दिल्ली।

❖◆❖